दिव्यम्

संस्कृत पाठमाला

5

1. वंदना

❐ अभ्यासकंठी

1. असतो मा **सद्गमय**।
   तमसो मा ज्योतिर्गमय।
   मृत्योर्माऽ**मृतं गमय**।।

   तेजोऽसि **तेजो मयि देहि**,
   वीर्यमसि वीर्यं मयि देहि।
   बलमसि **बलं मयि देहि**,
   ओजोऽसि ओजो मयि देहि।।

2. (क) त्वं आशीर्वादं ददातु।
   (ख) अत्र बहु तमः अस्ति।
   (ग) अहं त्वां प्रणमाम्यहम्।
   (घ) मां प्रकाशं प्रति नयतु।
   (ङ) भवन्तः सर्वे शक्तिशालिनः सन्ति।

3. (क) मृत्यु से अमरता की ओर ले जाएँ।
   (ख) हे तेजवान! मुझे तेज प्रदान कीजिए।
   (ग) हे ऊर्जा स्रोत! मुझे ऊर्जा प्रदान कीजिए।
   (घ) हे प्रभो। मुझे असत्य के मार्ग से सद्मार्ग पर ले जाएँ।
   (ङ) मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाएँ।

❑

2. विजयादशमी

❐ अभ्यासकंठी

1. (क) उत्सवप्रिया: (ख) रावणस्य (ग) शस्त्रपूजनं (घ) बङ्गालप्रान्ते
   (ङ) पूर्णोत्सोहन
2. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (v) (घ) (ii) (ङ) (i)
3. (क) उत्सव + प्रिया: (ख) शस्त्र + पूजनम्
   (ग) सम् + उपलभ्यते (घ) धर्म + आचरणम्
   (ङ) परं + च
4. (क) **अर्थः**—उत्सव या त्योहार।
   वाक्य प्रयोगः—अयम् उत्सवः बङ्गालप्रान्ते दुर्गापूजारूपेण प्रचलितोऽस्ति।
   (ख) **अर्थः**—जो धर्म के अनुरूप न हो।
   वाक्य प्रयोगः—अधर्मस्य दारुणः परिणामः भवति।

(ग) **अर्थः**—आधार मानकर।
वाक्य प्रयोगः—दुर्गासप्तशतीकथाम् आश्रित्य भवतु।
(घ) अर्थः—आग में जलाना।
वाक्य प्रयोगः—अहंकारस्य प्रतीकरूपस्य रावणस्य अग्निदाहः भवति।
(ङ) **अर्थः**—नीति-संगत बात या उचित अनुचित का विवेक।
वाक्य प्रयोगः—अन्यायस्य उपरि न्यायस्य विजयं सूचयति।

5. (क) भारतीयाः उत्सवप्रियाः भवन्ति।
(ख) अस्य उत्सवस्य आयोजनं आश्विन मासस्य शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ भवति।
(ग) अस्मिन् अवसरे भारतीयाः शस्त्रपूजनं कुर्वन्ति।
(घ) विजयादशमी उत्सवात् इयं शिक्षाऽपि समुपलभ्यते यत् धर्मः एव जयति अधर्मस्य च दारुणः परिणामः भवति।
(ङ) अहंकारस्य प्रतीकः रावणः अस्ति।

6. (क) भारतीयाः उत्सवप्रियाः भवन्ति।
(ख) भारतीयोत्सवेषु विजयदशमीयाः विशेषं महत्वम् अस्ति।
(ग) श्रीरामः मर्यादायाः, सत्यस्य सदाचारस्य च प्रतीकः मन्यन्ते।
(घ) धर्मस्य आचरणं श्रेयस्करम्।
(ङ) दशहरादिने भारतीयाः शस्त्रपूजनं कुर्वन्ति।

7. (क) भारतीय उत्सव प्रिय होते हैं।
(ख) इस दिन राम ने रावण का वध किया था।
(ग) यह उत्सव अश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है।
(घ) रामलीला से अधर्म और अहंकार के प्रतीक रूप रावण का अग्निदाह होता है।
(ङ) मनुष्य इस उत्सव को पूर्ण उत्साहपूर्वक मनाते हैं।

❑

3. दीपावलिः

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (ब) लक्ष्म्याः (ख) (स) दीपावल्याः
(ग) (अ) बालकाः

2. (क) प्रयच्छन्ति (ख) मृत्तिकया (ग) भवति (घ) कुर्वन्ति

3. (क) रात्रौ जनाः मातुः लक्ष्म्याः पूजनं कुर्वन्ति।
(ख) राजमार्गान् विद्युतवर्तिभिः प्रकाशयन्ति।
(ग) दीपावलिः अवसरे जनाः मिष्ठान्नं खादन्ति।
(घ) ग्रामेषु जनाः स्वगृहाणि मृत्तिकया लिम्पन्ति।

4. (क) दीपावलि: एक: महान् उत्सव: अस्ति।
(ख) ग्रामजना: स्वस्था: सन्ति।
(ग) जना: देवीं पूज्यन्ति।
(घ) वयं विपणात् मिष्ठान्नं क्रयं कुर्वन्ति।
5. स्वयं कीजिए।

❑

4. वीरः बालः–अभिमन्युः

❐ अभ्यासकंठी

1. (क) युधिष्ठिर आदय: (ख) रक्षणाय व्यूहं भेत्तुं
(ग) आहूता: (घ) शत्रुभि: परिवृत्त:
2. (क) युद्धावसरे (ख) कोऽपि (ग) वीरगति: (घ) कुत्रापि
(ङ) तथापि (च) निस्सरणम्
3. (क) म् + अ + ह् + आ + भ् + आ + र् + अ + त् + ए
(ख) ल् + अ + ब् + ध् + व् + आ
(ग) च् + अ + क् + र् + व् + य् + ऊ + ह् + अ:
(घ) ग् + औ + र् + अ + व् + अ:
(ङ) श् + इ + क् + ष् + इ + त् + अ
(च) क् + अ + प् + अ + ट् + ए + न् + अ
(छ) र् + अ + क् + ष् + ण् + अ + म्
(ज) अ + भ् + आ + व् + अ:
(झ) प् + अ + र् + इ + व् + ऋ + त् + अ:
4. (क) युद्धावसरे (ख) लब्ध्वा (ग) पाण्डवा: (घ) निषिद्ध:
(ङ) अभिमन्यु: (च) शत्रुभि:
5. (क) स: युद्धाय कुरुक्षेत्रे आगच्छत्।
(ख) अभिमन्यु: अर्जुनस्य पुत्र: आसीत।
(ग) अभिमन्यु: कौरवै: कपटेन हत:।
(घ) वीर: अभिमन्यु: युद्धे कपटेन शत्रुभि: परिवृत:।
(ङ) वयं वीरम् अभिमन्युं शौर्येण स्मराम:।
6. (क) अभिमन्यु: अर्जुनस्य पुत्र: आसीत्।
(ख) कौरवै: चक्रव्यूह: रचित:।
(ग) अभिमन्यु: चक्रव्यूहं प्रविशत्।

(घ) अन्ते अभिमन्युः हतः।
(ङ) अर्जुनः श्रीकृष्णः च अन्यस्मिन् युद्धे सुदूरः गतः आसीत्।
(च) कौरवाः अभिमन्युं आक्रमितवन्तः।

7. (क) मुझे चक्रव्यूह तोड़ने की आज्ञा दीजिए।
(ख) किन्तु निकलने के ज्ञान के अभाव के कारण वह शत्रुओं से घिर गया।
(ग) जिसने अपने प्राण देकर अपने कुल के गौरव की रक्षा की।
(घ) तब कौरवों में श्रेष्ठ दुर्योधन ने अवसर पाकर चक्रव्यूह की रचना की।
(ङ) अकेले वह अनेक महारथियों के साथ युद्ध करते हुए रक्त में नहा गया।

8. स्वयं कीजिए।

❑

5. वार्तालापः

❐ अभ्यासकंठी

1. (क) गमिष्यसि (ख) ग्रीष्म-अवकाशे
(ग) ताजमहलं (घ) त्वं

2.

	शब्द	लकारः	वचनम्	पुरुषः
(क)	द्रक्ष्यावः	लृट	द्विवचन	उत्तम
(ख)	गमिष्यन्ति	लृट	बहुवचन	प्रथम
(ग)	चलिष्यति	लृट	एकवचन	प्रथम
(घ)	भविष्यामः	लृट	बहुवचन	उत्तम

3. (क) ग्रीष्म-अवकाशे त्वं कुत्र गमिष्यसि?
(ख) अहम् देहलीनगरं गमिष्यामि।
(ग) किं त्वं तत्र अटितुं गमिष्यसि?
(घ) तत्र ताजमहलपि सन्ति।
(ङ) तर्हिं त्वं कदा गमिष्यसि।

4. (क) अवकाशः — छुट्टी (ख) परतन्त्रम् — गुलाम
(ग) अनुजः — छोटा भाई (घ) आङ्गलैः — अंगुलियों से
(ङ) सम्मिलितः — सम्मिलित (च) द्रष्टुम् — देखने के लिए

5. (क) सौरभः ग्रीष्म-अवकाशे आगरानगरं गमिष्यति।
(ख) गौरवस्य मित्रं सौरभः अस्ति।
(ग) सौरभस्य मातुलस्य विवाहः भविष्यति।
(घ) आगरानगरे विश्वप्रसिद्धं ताजमहलं स्थितम् अस्ति।
(ङ) ताजमहलं श्वेत-सङ्गमरमर पाषाणेन निर्मितम् अस्ति।

6. (क) देहलीनगरे लाल किला: अस्ति।
(ख) अहं लाल किला: द्रष्टुम् इच्छामि।
(ग) किं त्वंमपि मया सह चलिष्यसि।
(घ) त्वम् कुत्र गमिष्यसि।
(ङ) अहम् देहलीनगरं गमिष्यामि।

7. (क) वहाँ मेरा कोई परिचित नहीं है।
(ख) आप हमारे साथ चलें।
(ग) बताओ, तुम कब जा रहे हो।
(घ) हम कल जायेंगे।
(ङ) क्या तुम अकेले ही जाओगे?
(च) वहाँ मेरे मामा का विवाह होगा।
(छ) हाँ, वह वहाँ है।

❑

6. विषरहिता यमुना

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) पिपासया (ख) दृष्ट्वा व्याकुला:
(ग) कालियानागस्य (घ) विषरहिता (ङ) अन्यत्र
(ङ) बहि: (च) निकषा

2.

	पुरुष:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा— (क)	प्रथमपुरुष:	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
	मध्यमपुरुष:	**अपठ:**	अपठतम्	**अपठत्**
	उत्तमपुरुष:	**अखादम्**	**अखादाव**	अखादाम्
(ख)	प्रथमपुरुष:	**अहसत्**	अहसताम्	**अहसन्**
	मध्यमपुरुष:	**अरक्ष:**	**अरक्षतम्**	अरक्षत
	उत्तमपुरुष:	अनमम्	**अनमाव**	**अनमाम**

3.

पदम्	हिन्दी	अंग्रेजी
(क) अद्य	आज	Today
(ख) अपि	भी	Too
(ग) कदा	जब	When
(घ) सर्वदा	हमेशा	Always
(ङ) अधुना	इस समय	Now
(च) श्व:	कल	Tomorrow
(छ) अत्र	यहाँ	Here

(ज) ह्यः   कल   Yesterday
(झ) कुतः   कहाँ से   Where from
(ञ) च   और   And

4. (क) मुतः   (ख) विषं   (ग) अनादरः
(घ) एकं   (ङ) विषयुक्तः   (च) निकटे
(छ) पाताले   (ज) दुःखदम्   (झ) प्रसन्नः   (ञ) मित्रता

5. (क) गोपाः श्रीकृष्णेन सह अगच्छतन्।
(ख) एकदा षड्वर्षीयः श्रीकृष्णः वृन्दावने यमुनातटम् अगच्छत्।
(ग) श्रीकृष्णः गोपान् मूर्च्छितान् दृष्ट्वा व्याकुलाः अभवत्।
(घ) खगाः पशवः च यमुनाजलं पीत्वा मृत्युं प्राप्ताः।
(ङ) कालियनागस्य एकाधिकशतं फणाः आसन्।

6. (क) तस्मात् वृक्षात् सः विषयुक्ते जले अकूर्दत्।
(ख) किं न जानासि त्वं यत् तव कारणात् सर्व जलं विषयुक्तं भवति।
(ग) अनेके खगाः पशवः च तत् जलं पीत्वा मृत्युं प्राप्ताः।
(घ) श्रीकृष्णः तान् मूर्च्छितान दृष्ट्वा व्याकुलाः अभवत्।
(ङ) वस्तुतः यमुनाजले कालियनागस्य कुण्डम् आसीत्।

7. जब श्रीकृष्ण ने यह सब कुछ देखा, वह एक वृक्ष पर चढ़ गए। उस वृक्ष से वह विषैले पानी में कूद गए। कालियानाग के एक सौ एक फण थे। उसने उनको फैलाकर कृष्ण को मारने के लिए इच्छा (चाह) की। श्रीकृष्ण उन फणों पर चढ़कर नाचने लगे। कालियानाग के फण धीरे-धीरे टुकड़े-टुकड़े हो गए। मुँह से खून बहने लगा।

8. स्वयं कीजिए।

❑

7. सुभाषितानि

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (ब) मृगाः   (ख) (अ) वसन्त समये
(ग) (स) गजे गजे   (घ) (ब) घटः
(ङ) परमो

2. (क) कुतो   (ख) भुवि   (ग) चन्दनम्   (घ) कार्याणि   (ङ) हेतुः

3. (क) (ii)   (ख) (iv)   (ग) (vi)   (घ) (i)   (ङ) (iii)
(च) (v)

4. (क) सर्वत्र वने चन्दनं न भवन्ति।
(ख) अमित्रस्य सुखम् न भवति।
(ग) कार्याणि उद्यमेन हि सिध्यन्ति।

(घ) जलबिन्दुनिपातेन घट: पूर्यते।
(ङ) विद्याहीना: मर्त्यलोके भुवि भारभूता: चरन्ति।
(च) वसन्तसमये काक: पिक: भेद: स्पष्टं भवति।

5. (क) राम: पुस्तकं पठति।
(ख) लक्ष्मण: रामेन सह गच्छति।
(ग) राम: रावणं मारितवान्।
(घ) सत्यं विजयं भवति।
(ङ) अलसस्य कुतो विद्या।

6. स्वयं कीजिए।

❑

8. पर्यावरणम्

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) सागरजन्तवश्चापि (ख) प्रतिक्षणं
(ग) प्रदूषणं (घ) रक्षणीयानि (ङ) उच्छेद:

2. (क) शिला + खण्ड: (ख) सु + अल्पतरम्
(ग) सम् + आरोपणम् (घ) शाक + वाटिका
(ङ) सम् + उल्लसन्तु

3.

(क)	सागर:	=	जलधि:	सिन्धु:	नीरनिधि:
(ख)	पर्वत:	=	गिरि	अद्रि	शैल
(ग)	सर:	=	सरोवर:	तड़ाग:	सरिता:

4. (क) **अर्थ:**—पर्वत
वाक्य-प्रयोग:—हिमालय: एक: पर्वत: अस्ति।
(ख) **अर्थ:**—वायुमण्डल
वाक्य-प्रयोग:—एतद् विपरीतं तथा न वर्धन्ते वायुमण्डलं परिशोधनाय साधनापि।
(ग) **अर्थ:**—धुएँ से
वाक्य-प्रयोग:—धूम्रै: वायुमण्डलं भृशं प्रदूषयति।
(घ) **अर्थ:**—परीक्षण
वाक्य-प्रयोग:—रक्ताद्यर्थ-चातुरर्थिकयो: परीक्षणम्।
(ङ) **अर्थ:**—कटाव
वाक्य-प्रयोग:—वृक्षाणाम् उच्छेद: रोधनीय:।

5. (क) अस्माकं सरंक्षणाय सम्वर्धनाय च प्रकृति: सदैव यत्नं करोति।
(ख) सम्प्रति तैलचालितानि यानानि यन्त्राणि च धूमै: स्वस्थं वायुमण्डलं भृशं प्रदूषयन्ति।

(ग) समुद्रस्य वातावरणं अस्त्राणां परीक्षणै: प्रदूषितं भवति।
(घ) वनप्राणिनो संरक्षणाय अरण्याणां सङ्ख्या वर्धनीया।
(ङ) प्रदूषितै: जलै: नदीनां नीरमपि प्रदूषितं भवति।

6. (क) अस्माकं संरक्षणाय सम्वर्धनाय च प्रकृति: सदैव यत्नं करोति।
(ख) धूम्रै: वायुमण्डलं प्रदूषितं भवति।
(ग) अस्त्राणां परीक्षणै: समुद्रस्य जलं प्रदूषितं भवति।
(घ) जना: वन्यपशून् मनोविनोदाय हिंसन्ति।
(ङ) वृक्षाणाम् उच्छेद: रोधनीय:।

7. (क) ये सब वायु के विकारों को स्वयं पीते हैं।
(ख) अस्त्रों के परीक्षणों से समुद्र का वातावरण दूषित होता है।
(ग) समुद्र प्राणियों को यत्नपूर्वक मार रहे हैं।
(घ) वनों की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए।
(ङ) पर्वतों में औषधियों, नदियों और झरनों को संवर्धन करना चाहिए।

8. स्वयं कीजिए।

❑

9. मूर्ख: कच्छप:

❑ अभ्यासकंठी

1. (क) (ब) द्वौ (ख) (क) कच्छप:
(ग) (अ) कच्छप:

2. (क) सरोवर: (ख) अनावृष्टि: (ग) क्षुब्धा:, पलायिता:
(घ) उत्पतितुं

3. (क) कच्छपस्य द्वौ हंसौ मित्रौ आस्ताम्।
(ख) ग्रामवासिन: आकाशे आश्चर्यं अपश्यन।
(ग) कच्छपस्य नाम दुर्मति आसीत्।
(घ) अनावष्टे: कारणात् वने सर्वे जीवा: क्षुब्धा: सन् तस्मात् वनात् पलायिता: अभवन।

4. (क) **अर्थ:**—सूखे के कारण
वाक्य-प्रयोग:—एकदा तत्र अनावृष्टि: अभूत।
(ख) **अर्थ:**—पलायन करना
वाक्य-प्रयोग:—जीवा: क्षुब्धा: सन् तस्मात् वनात् पलायिता अभवन्।
(ग) **अर्थ:**—परेशान
वाक्य-प्रयोग:—जलं विना कच्छप: व्याकुल: अभवत्।

(घ) **अर्थ:**—डण्डा

वाक्य-प्रयोग:—आवां लगुडम् आनेष्याव:।

(ङ) **अर्थ:**—कछुआ

वाक्य-प्रयोग:—दुर्मति: नाम कच्छप: अवसत्।

5. स्वयं कीजिए।

❑

10. चत्वार: मूर्खा: पण्डिता:

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) देशान्तरं (ख) योजितवान् (ग) परीक्षां (घ) मा

2.

	क्रिया		क्तवतु प्रत्यय	शब्द:
(क)	पठ् (पढ़ना)	—	इतवान्	पठितवान्
(ख)	खेल् (खेलना)	—	इतवान्	खेलितवान्
(ग)	पिब् (पीना)	—	इतवान्	पिबितवान्
(घ)	कृ (करना)	—	इतवान्	कृतवान्
(ङ)	नृत् (नाचना)	—	इतवान्	नृतितवान्
(छ)	खाद् (खाना)	—	इतवान्	खादितवान्

3. (क) **अर्थ:**—गरीब आदमी

वाक्य-प्रयोग:—स: दरिद्र: आसीत्।

(ख) **अर्थ:**—मूर्ख पण्डित

वाक्य-प्रयोग:—कस्मिंश्चित् ग्रामे चत्वार: मूर्ख पण्डिता: आसन्।

(ग) **अर्थ:**—निश्चित क्रम में

वाक्य-प्रयोग:—स: सिंहस्य अस्थीनि योग्यक्रमेण योजितवान्।

(घ) **अर्थ:**—खा गया।

वाक्य-प्रयोग:—स: सिंह: तान् पण्डितान् हत्वा खादितवान्।

(ङ) **अर्थ:**—चढ़ गया।

वाक्य-प्रयोग:—एकां नौकाम् आरूढवान्।

4. (क) चत्वार: मूर्खपण्डिता: निश्चयं कृतवन्त: यत् वयं देशान्तरं गत्वा महाराजस्य पुरत: स्व ज्ञानस्य पाण्डितस्य च प्रदर्शनं करिष्याम:।

(ख) मार्गे ते एकस्य मृतसिंहस्य अस्थीनि दृष्टवन्त:।

(ग) सिंहस्य अस्थीनि दृष्ट्वा प्रथम: पण्डित: सिंहस्य अस्थीनि योग्यक्रमेण योजितवान्। तदा द्वितीय: तत्र रक्त-मांस-चर्मादिकं योजितवान्।

(घ) शास्त्र ज्ञानरहित: चतुर्थ: उक्तवान्—"एतस्य जीवनदानं मा कुरु। यदि एष: सिंह: जीवित: भविष्यति, तर्हि अस्मान् मारयिष्यति।

(ङ) जीवित: भूत्वा स: सिंह: तान् पण्डितान् हत्वा खादितवान्।

5. (क) कस्मिंश्चित् ग्रामे चत्वार: कृषका: निवसन्ति स्म:।

(ख) ते व्यवहारे अतीव कठोर: आसन् परं कर्मठ: आसन्।

(ग) वयम् एनं सिंह जीवितं कुर्म:।

(घ) जीवितं मा कुरु।

(ङ) मूर्खस्य ज्ञानम् अनर्थस्य कारणम्।

6. (क) उनमें से तीन शास्त्रों में निपुण थे, किन्तु व्यवहार में बुद्धिरहित अर्थात् मूर्ख थे।

(ख) एक अन्य शास्त्रों को तो नहीं जानता था किन्तु बुद्धिमान था।

(ग) मार्ग में उन्होंने मरे हुए शेर की हड्डियों को देखा।

(घ) हम इस शेर को जीवित करें।

(ङ) इसको जीवित मत करो।

❑

11. एत खेलत खेलम्

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) सुन्दरं, वायुं (ख) खेलाङ्गने, मिलित्वा

(ग) पालयत, शुद्धम्, कुरुत, नैव (घ) विद्धते, जगति

2. (क) बालीका: — **बालिका:** (ख) कूरूते — **कुरुते**

(ग) कतोरम् — **कठोरम्** (घ) मीलीत्वा — **मिलित्वा**

(ङ) वीधी — **विधिं**

3. (क) **त बालिका: खेलत खेलम्।**

(ख) अहं इदम् कीचिकां मया धार्यते।

(ग) यदि खेले किञ्चित् जिह्व भवति।

(घ) दृढं सुन्दरं च कन्दुकं आनयत्।

(ङ) सर्वे मिलित्वा कन्दुकं खेलन्तु।

4. (क) खेल: सुखदं मेलम् कुरुते।

(ख) वायुं भृत्वा कठोरम् कुरुत।

(ग) कृतगर्वा: खेलाङ्गने चलत:।

(घ) मया कीचिका धार्यते।

(ङ) बालिका: कन्दुक-खेलनै: स्वस्था: तुष्टा: च भवन्ति।

5. (क) रामं आगच्छतु। पाठं पठन्तु।
   (ख) एकः सुन्दरं कन्दुकं आनयतु।
   (ग) यूयमं मिलित्वा क्रीडथ।
   (घ) क्रीडायां युद्धं न कुर्वन्तु।
   (ङ) क्रीडनेन शरीरं स्वस्थं भवति।
6. (क) खेल सुख व एकता बढ़ाता है।
   (ख) विनिता आओ। खेल के मैदान में चलो।
   (ग) गेंद को कठोर करो।
   (घ) उद्दण्डता मत करो।
   (ङ) वह देश संसार में विजय प्राप्त करता है।

❑

12. राष्ट्रिय चिह्नानि

❒ अभ्यासकंठी

1. (क) त्रिपट्टिका: (ख) मयूर: (ग) पुष्पम् अस्ति (घ) व्याघ्र:
2. (क) पंकजम्, सरोज: (ख) द्विज:, विहंग:
   (ग) सुमन:, कुसुम: (घ) पताका:, तोरण:
   (ङ) बाघ:, शार्दुल:
3. (क) राष्ट्र: + ध्वज: (ख) पङ्ककेन + हीनम्
   (ग) सर्पम् + भक्षणम् (घ) शुभ: + सन्देश:
   (ङ) शक्तिनां + सम्पन्ना:
4. (क) **अर्थः**—चक्र
   वाक्य-प्रयोगः—मध्यपट्टिकाया: मध्ये अशोक चक्रम् विद्यते।
   (ख) **अर्थः**—राष्ट्रीय ध्वज
   वाक्य-प्रयोगः—राष्ट्रध्वज: त्रिभि: वर्णे: संयुत: अस्ति।
   (ग) **अर्थः**—कमल
   वाक्य-प्रयोगः—कमलम् अस्माकं राष्ट्रिय पुष्पम् अस्ति।
   (घ) **अर्थः**—जन्म के साथ से
   वाक्य-प्रयोगः—सर्पभक्षणम् मयूरस्य जन्मजात: गुण: अस्ति।
   (ङ) **अर्थः**—मोर
   वाक्य-प्रयोगः—मयूर: अस्माकं राष्ट्रिय: खग: अस्ति।
   (च) **अर्थः**—प्रतीक
   वाक्य-प्रयोगः—अयं सुन्दरताया:, शिक्षाया: कलाया: च द्योतक: अस्ति।

5. (क) राष्ट्रध्वजे त्रिपट्टिका: विराजन्ते।
(ख) अस्माकं राष्ट्रगानं विश्वकविना रवीन्द्रेण ''जन-गण-मन'' इति रचितम् अस्ति।
(ग) कमलं अस्माकं राष्ट्रिय पुष्पम् अस्ति।
(घ) व्याघ्र: अस्माकं राष्ट्रिय: पशु: अस्ति।
(ङ) कमलं सौंदर्यस्य कोमलताया: निर्मलताया: शान्ते: च सन्देशं वितरति।
6. (क) अस्माकं राष्ट्रध्वज: त्रिभि: वण: सन्ति।
(ख) कमलं सुन्दरं पुष्पम् अस्ति।
(ग) मयूर: अस्माकं राष्ट्रिय: खग: अस्ति।
(घ) कमलं पङ्के वर्धते।
(ङ भारतस्य राष्ट्रिय पशु: व्याघ्र: अस्ति।

❑

13. कृषक:

❐ अभ्यासकंठी

1. (क) (स) अन्नं (ख) (अ) हलं कुर्म:
(ग) (ब) परिश्रमी:
2. (क) गच्छति (ख) महत्त्वपूर्ण: (ग) चूर्णकं (घ) न भवति
3. (क) कृषकस्य वृषभौ पुष्टौ भवत:।
(ख) अन्नं विना लोकानां जीवनं सम्भवं न भवति।
(ग) जलस्य उत्क्षेपणाय पम्पसेट यंत्रस्य उपयोग: भवति।
(घ) कृषक: अन्नाय अहर्निशं परिश्रमं करोति।
4. (क) कुएँ से (ख) चिड़ियाँ (ग) खेतों में (घ) हल से

❑

14. ईश्वरचंद्र: विद्यासागर:

❐ अभ्यासकंठी

1. (क) (स) सरलम् (ख) (ब) विद्यासागर:
(ग) (अ) तस्य पादयो: पतित:
2. (क) भाषाणां (ख) आसीत् (ग) अपि (घ) महापुरुष:
3. (क) बहव: पुरुषा: तत्र विद्यासागरस्य भाषणं श्रोतुं आगच्छन्।
(ख) स: जन: विद्यासागरस्य पादयो: अपतत्।
(ग) विद्यासागर: एक: महापुरुष: आसीत्।
(घ) विद्यासागर: महान् विद्वान आसीत्।

4. (क) सुनने के लिए (ख) सागर का
(ग) सादा (घ) भी

❑

अर्द्धवार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

(अध्याय 1-8)

1. (क) (ब) लक्ष्म्या: (ख) (स) दीपावल्या:
(ग) (स) गजे गजे (घ) (ब) घट:
2. (क) शस्त्रपूजनं (ख) बङ्गालप्रान्ते (ग) आहूता:
(घ) शत्रुभि: परिवृत्त:
3. (क) भारतीया: उत्सवप्रिया: भवन्ति।
(ख) अस्य उत्सवस्य आयोजनं आश्विन मासस्य शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ भवति।
(ग) अभिमन्यु: कौरवै: कपटेन हत:।
(घ) वीर: अभिमन्यु: युद्धे कपटेन शत्रुभि: परिवृत:।
4. (क) तस्मात् वृक्षात् स: विषयुक्ते जले अकूर्दत्।
(ख) किं न जानासि त्वं यत् तव कारणात् सर्व जलं विषयुक्तं भवति।
(ग) अस्त्राणां परीक्षणै: समुद्रस्य जलं प्रदूषितं भवति।
(घ) जना: वन्यपशून् मनोविनोदाय हिंसन्ति।

❑

वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

(अध्याय 9-14)

1. (क) (ब) द्वौ (ख) (ब) कच्छप:
(ग) (स) अन्नं (घ) (अ) हलं कुर्म:
2. (क) त्रिपट्टिका: (ख) मयूर: (ग) चूर्णकं (घ) न भवति
3. (क) रामं आगच्छतु। पाठं पठन्तु।
(ख) एक: सुन्दरं कन्दुकं आनयतु।
(ग) यूयमं मिलित्वा क्रीडथ।
(घ) क्रीडायां युद्धं न कुर्वन्तु।
4. (क) खेल सुख व एकता बढ़ाता है।
(ख) विनिता आओ। खेल के मैदान में चलो।
(ग) गेंद को कठोर करो।
(घ) उद्दण्डता मत करो।

❑